स्नातक शोध सहित एम0ए0–संस्कृत (4+1), (3+2)

द्विवर्षीय पूर्णकालिक पाठ्यक्रम

सी0बी0सी0एस0

(च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम)

पाठ्यक्रम–विवरण

संस्कृत एवं प्राकृतभाषा विभाग,

दीनदयालय उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,

गोरखपुर–273009

वर्ष–2022–23

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

स्नातक शोध सहित एवं **एम0ए0 (संस्कृत) का पाठ्यक्रम (C.B.C.S.)**

नयी शिक्षानीति (4+1) (3+2) योजना के अनुसार एम0ए0 संस्कृत का द्विवर्षीय पाठ्यक्रम चार सेमेस्टर्स में विभक्त होगा। प्रत्येक सेमेस्टर में पाँच कोर्सेस (प्रश्न पत्र) होंगे, जिनके अध्यापन की अवधि छह माह होगी। प्रत्येक कोर्स पाँच क्रेडिट तथा प्रत्येक सेमेस्टर पच्चीस क्रेडिट का होगा। इस प्रकार चारों सेमेस्टर्स में कुल मिलाकर सौ क्रेडिट होंगे। प्रत्येक कोर्स 100 अंकों का होगा, जिसमें से 75 अंकों की लिखित परीक्षा तथा 25 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन होगा, जिसमें 25 अंकों में प्रोजेक्ट एवं असाइंमेन्ट प्रत्येक के लिए 10 अंक तथा कक्षा में उपस्थिति के लिए 05 अंक इत्यादि के लिए निर्धारित है। प्रथम के पांच कोर कोर्स तथा द्वितीय सेमेस्टर के चार कोर कोर्स एवं एक इलेक्टिव कोर्स होगा। दोनो ही सेमेस्टर में अन्तिम कोर्स लघु शोध परियोजना के रूप में होगा। तृतीय सेमेस्टर में दो कोर कोर्स दो ओपेन इलेक्टिव कोर्स तथा एक लघु शोध परियोजना एवं चतुर्थ सेमेस्टर्स में एक कोर कोर्स, तीन ओपेन इलेक्टिव कोर्स तथा एक लघु शोध परियोजना को कोर्स होगा। जिन्हें निर्धारित चार वैकल्पिक वर्गों–वेद, व्याकरण, दर्शन तथा साहित्य में से किसी एक के रूप में लेना होगा। दोनों वर्षों के पाठ्यक्रमों का प्रारूप इस प्रकार होगा।

प्रथम वर्ष–	सेमेस्टर–1,	सेमेस्टर–2
द्वितीय वर्ष–	सेमेस्टर–3,	सेमेस्टर–4

पाठ्य–विषय

प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर (जुलाई से दिसम्बर)			क्रेडिट
कोर्स–1,	**SANS 500** **ओपेन इलेक्टिव कोर्स**	भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण	5
कोर्स–1,	**SANS 501**	–ऋग्वेद संहिता एवं ऋग्वेदभाष्यभूमिका	5
कोर्स–2,	**SANS 502**	–सांख्यदर्शन एवं तर्कभाषा	5
कोर्स–3,	**SANS 503**	–काव्य एवं काव्यशास्त्र	5
कोर्स–4,	**SANS 504**	– व्याकरण	5
कोर्स–5,	**SANS 505**	– शोधपरियोजना / रिसर्च प्रोजेक्ट	4
प्रथम वर्ष, द्वितीय सेमेस्टर (जनवरी से जून)			
कोर्स–1,	**SANS 506**	– अथर्ववेद एवम् उपनिषद्	5
कोर्स–2,	**SANS 507**	– काव्यप्रकाश एवं चम्पू काव्य	5
कोर्स–3,	**SANS 508**	– णिजन्तादि एवं तद्धित प्रकरण	5
निम्नलिखित तीन ऐच्छिक वर्गों में से किसी एक वर्ग के सभी कोर्स			
कोर्स–4, ऐच्छिक	**SANS 509**	– कौटिल्यीय अर्थशास्त्र	5
	SANS 510	– पालि प्राकृत अपभ्रंश संग्रह	5
	SANS 511	– वेदान्तसार	5
कोर्स–5,	**SANS 512**	– शोधपरियोजना / रिसर्च प्रोजेक्ट	4
द्वितीय वर्ष, तृतीय सेमेस्टर (जुलाई से दिसम्बर)			
कोर्स–1,	**SANS 513**	– महाभाष्य एवं निबन्ध (अनिवार्य कोर्स)	5
कोर्स–2,	**SANS 514**	– भाषा विज्ञान	5
निम्नलिखित चार ऐच्छिक वर्गों में से किसी एक वर्ग के सभी कोर्स			
कोर्स–3 ऐच्छिक	**SANS 515**	–यजुर्वेद	5
	SANS 516	–मध्यसिद्धान्त कौमुदी एवं वाक्यपदीय	5
	SANS 517	–न्यायदर्शन	5
	SANS 518	–काव्यशास्त्र	5
कोर्स–4 ऐच्छिक	**SANS 519**	–ऐतरेय ब्राह्मण एवं यज्ञ	5
	SANS 520	–महाभाष्य	5
	SANS 521	–वैशेषिक दर्शन	5
	SANS 522	–गद्यकाव्य	5
कोर्स–5,	**SANS 523**	–शोधपरियोजना / रिसर्च प्रोजेक्ट	4
द्वितीय वर्ष, चतुर्थ सेमेस्टर (जनवरी से जून)			
कोर्स–1,	**SANS 524**	–व्याकरण एवं अनुवाद	5
कोर्स–2 ऐच्छिक	**SANS 525**	–निरूक्त एवं वैदिक छंद	5
	SANS 526	–परमलधुमंजूषा वैयाकरणभूषणसार	5
	SANS 527	–योग एवं आगम	5
	SANS 528	–काव्यप्रकाश	5
कोर्स–3	**SANS 529**	–अर्थसंग्रह एवं वृहद्देवता	5

ऐच्छिक	**SANS 530**	–परिभाषेन्दु शेखर	5
	SANS 531	–चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शन	5
	SANS 532	–दशरूपक	5
कोर्स–4 ऐच्छिक	**SANS 533**	–ऋक्प्रातिशाख्य एवं वैदिक स्वर	5
	SANS 534	–सिद्धान्तकौमुदी	5
	SANS 535	– वेदान्त एवं मीमांसा	5
	SANS 536	–काव्य एवं नाटक	5
कोर्स–5,	**SANS 537**	–शोधपरियोजना/रिसर्च प्रोजेक्ट	4

परीक्षा–योजना

1. प्रत्येक सेमेस्टर के अन्त में लिखित परीक्षा होगी।
2. लिखित परीक्षा में प्रत्येक कोर्स की निर्धारित पाठ्य सामग्री, जिसे पाँच समान इकाइयों में विभक्त किया गया है, से आन्तरिक विकल्प के साथ प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक इकाई के लिए 14 अंक निर्धारित है। इसमें भाषा का विषय होने के कारण अपेक्षानुसार व्याख्यात्मक, परिचयात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जा सकेंगे।
3. आन्तरिक परीक्षा हेतु प्रत्येक कोर्स के लिए 25 अंक निर्धारित है। इसमें 10 अंक एसाइनमेण्ट, 10 अंक प्रोजेक्ट एवं शेष 05 अंक छात्र की कक्षा में उपस्थिति एवं अनुशासन के आधार पर सम्बन्धित शिक्षक द्वारा दिए जाएंगे।
4. उत्तीर्ण प्रतिशत एवं श्रेणी इत्यादि के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत सुसंगत नियम लागू होंगे।

पाठ्यक्रम का विस्तृत विभाजन
प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर

क्रेडिट 05
अंक 100

कोर्स–1, SANS 500–**भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण (ओपेन इलेक्टिव कोर्स)**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराते हुए पर्यावरण–संरक्षण के प्रति जागरूक करना।

प्रथम इकाई–संस्कृति का अर्थ, परिभाषा, विशेषताएं, मूलतत्त्व, भारतीय संस्कृति का विकास, संस्कृति और सभ्यता में अन्तर, अन्य संस्कृतियों पर प्रभाव

द्वितीय इकाई–संस्कृत साहित्य में समाज, जीवन मूल्य एवं वर्णाश्रम–व्यवस्था

तृतीय इकाई–पुरुषार्थ एवं संस्कार

चतुर्थ इकाई–प्राचीन भारतीय शिक्षा–व्यवस्था

पञ्चम इकाई–पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा एवं महत्त्व, पर्यावरण के तत्त्व, पर्यावरण को क्षति पहुंचाने वाले घटक, संरक्षण के उपाय, पर्यावरणीय प्रदूषण एवं उन्हें दूर करने के उपाय, संस्कृत साहित्य में पर्यावरण।

कोर्स–1, **SANS**. 501- **ऋग्वेद संहिता एवं ऋग्वेदभाष्यभूमिका**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को ऋग्वेद के कतिपय महत्त्वपूर्ण सूक्तों से एवं भाष्य भूमिका के माध्यम से वैदिक चिन्तन परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–ऋग्वेद का विभाजन–अष्टकक्रम एवं मण्डल क्रम

द्वितीय इकाई–उषस्सूक्त (3.61) तथा विश्वेदेवा सूक्त(1.89)

तृतीय इकाई–सरमापणि–संवाद (10.108), नासदीय सूक्त(10.129)

चतुर्थ इकाई–ऋग्वेदभाष्यभूमिका–वेदापौरुषेयत्वसिद्धि तक

पंचम इकाई–ऋग्वेदभाष्यभूमिका–वेदापौरुषेयत्वसिद्धि के बाद से अन्त तक

कोर्स–2, **SANS 502- सांख्यदर्शन एवं तर्कभाषा**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय दर्शन की कतिपय शाखाओं का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई–सांख्यकारिका–01 से 14 तक

द्वितीय इकाई–सांख्यकारिका–15 से 29 तक

तृतीय इकाई–सांख्यकारिका–30 से 43 तक

चतुर्थ इकाई–तर्कभाषा प्रारम्भ से प्रत्यक्ष प्रमाण तक

पञ्चम इकाई–तर्कभाषा अनुमान प्रमाण तक

कोर्स–3, **SANS 503- काव्य एवं काव्यशास्त्र**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भारतीय दर्शन का ज्ञान प्राप्त कराना।

पाठ्यग्रन्थ–काव्यप्रकाश(प्रथम, द्वितीय उल्लास) एवं नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग के प्रारम्भ से 50 श्लोक)

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को संस्कृत के उन्नत काव्य एवं काव्यशास्त्र से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–काव्यप्रकाश–प्रथम उल्लास

द्वितीय इकाई–काव्यप्रकाश, द्वितीय उल्लास में प्रारम्भ से सूत्र 11 तक

तृतीय इकाई–काव्यप्रकाश, द्वितीय उल्लास–लक्षणानिरूपण से अन्त तक

चतुर्थ इकाई–नैषधीयचरित प्रथम सर्ग–श्लोक 1 से 25 तक

पञ्चम इकाई–नैषधीयचरित–प्रथम सर्ग श्लोक 26 से 50 तक

कोर्स–4, **SANS 504- व्याकरण**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया का ज्ञान कराना, जिससे वे संस्कृत बोलने और लिखने में समर्थ हो सकें।

पाठ्यग्रन्थ–लघुसिद्धान्तकौमुदी

प्रथम इकाई–भू धातु (सभी 10 लकार) रूपसिद्धि

द्वितीय इकाई–एध् धातु (सभी 10 लकार) रूपिसिद्धि

तृतीय इकाई–कृत्य प्रक्रिया

चतुर्थ इकाई– पूर्वकृदन्त

पञ्चम इकाई–उत्तरकृदन्त

कोर्स–5, **SANS 505- शोधपरियोजना / रिसर्च प्रोजेक्ट**

प्रथम वर्ष, द्वितीय सेमेस्टर

क्रेडिट 05
अंक 100

कोर्स–1, **SANS 506- अथर्ववेद एवम् उपनिषद्**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को अथर्ववेद एवं तैत्तिरीयोपनिषद् के मूल भावों से परिचित कराना।

प्रथम इकाई– अथर्ववेद के सभी काण्डो का परिचय

द्वितीय इकाई–राष्ट्रभिवर्धन सूक्त (1.29), काल सूक्त (19.53)

तृतीय इकाई–दीर्घायु–प्राप्तिसूक्त (2.4), कृषि सूक्त (3.17)

चतुर्थ इकाई–शालानिर्माण सूक्त (3.12) तैत्तिरीयोपनिषद्–शीक्षावल्ली

पञ्चम इकाई– तैत्तिरीयोपनिषद्–शीक्षावल्ली

कोर्स–2, **SANS 507– काव्यप्रकाश एवं चम्पू काव्य**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को अलङ्कारों एवं चम्पूकाव्य से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–काव्यप्रकाश, नवम उल्लास।

द्वितीय इकाई–काव्यप्रकाश, दशम उल्लास से निम्नलिखित अलङ्कार (लक्षण एवम् उदाहरण)–उपमा, अनन्वय, उपमेयोपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, समासोक्ति, निदर्शना, अप्रस्तुतप्रशंसा, तथा अतिशयोक्ति।

तृतीय इकाई–काव्यप्रकाश, दशम उल्लास से निम्नलिखित अलङ्कार (लक्षण एवम् उदाहरण)–प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त, दीपक, विशेषोक्ति, विभावना, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति तथा काव्यलिङ्ग।

चतुर्थ इकाई–काव्यप्रकाश दशम उल्लास से निम्नलिखित अलङ्कार (लक्षण एवम् उदाहरण)–उदात्त, समुच्चय, अनुमान, परिसंख्या, संसृष्टि और सङ्कर।

पञ्चम इकाई–नलचम्पू–प्रारम्भ से आर्यावर्त–वर्णन पर्यन्त।

कोर्स–3, **SANS. 508- णिजन्तादि एवं तद्धित प्रकरण**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया का ज्ञान कराना जिससे वे संस्कृत बोल और लिख सकें।

पाठ्यग्रन्थ–लघुसिद्धान्त कौमुदी

प्रथम इकाई–णिजन्त एवं सन्नन्त।

द्वितीय इकाई–आत्मनेपद एवं परस्मैपद।

तृतीय इकाई–तद्धित–अपत्यार्थ, रक्ताद्यर्थ।

चतुर्थ इकाई–शैषिक।

पञ्चम इकाई–मत्वर्थीय।

कोर्स–4, SANS. 509 – **कौटिल्यीय अर्थशास्त्र**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को अर्थशास्त्र का सामान्य ज्ञान प्राप्त कराना।

पाठ्यग्रन्थ– कौटिल्यीय अर्थशास्त्र

प्रथम इकाई–प्रकरणाधिकरणनिर्देश से त्रयीस्थापना तक।

द्वितीय इकाई–वार्ता और दण्ड नीति से राजर्षि का व्यवहार तक।

तृतीय इकाई–अमात्यों की नियुक्ति से गुप्तचरो की कार्यों पर नियुक्ति तक।

चतुर्थ इकाई–अपने देश में कृत्य कथा अकृत्य पक्ष की रक्षा से मंत्राधिकार तक।

पञ्चम इकाई–दूत प्रणिधि से राज प्रणिधि तक।

कोर्स–4, **SANS. 510- पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों का प्राचीन भारोपीय परिवार की भाषाओं के साहित्य एवं दर्शन से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–पालिप्राकृत–अपभ्रंशसंग्रहः, लेखक–डॉ0 राम अवध पाण्डेय

प्रथम इकाई–पालि–धम्मपदसंगहो, बाबेरूजातकम् तथा पटिच्चसमुप्पादो।

द्वितीय इकाई–पालि–मायादेविया सुपिनं, चत्तारि अरियसच्चानि तथा तथागतस्स पच्छिमा वाचा।

तृतीय इकाई–प्राकृत–कर्पूरमञ्जरी, स्वप्नवासवदत्तम्

चतुर्थ इकाई–वसुदत्तकथा, अशोक अभिलेख तथा गिरनार अभिलेख

पञ्चम इकाई–अपभ्रंश–दोहाकोश, सन्देशरासक, अपभ्रंशमुक्तकसंग्रह

कोर्स–4, SANS 511– **वेदान्तसार**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वेदान्त दर्शन का ज्ञान प्राप्त कराना।

प्रथम इकाई– वेदान्तसार–अनुबन्ध चतुष्टय

द्वितीय इकाई– वेदान्तसार–अज्ञान एवं सृष्टिप्रक्रिया

तृतीय इकाई– वेदान्तसार–अध्यारोप अपवाद एवं तत्त्व पदार्थ शोधन

चतुर्थ इकाई–वेदान्तसार–महावाक्यार्थ विचार

पञ्चम इकाई–वेदान्तसार–स्वस्वरूप साक्षात्कार साधना, समाधि एवं जीवन्मुक्ति

कोर्स–5, **SANS 512- शोधपरियोजना/रिसर्च प्रोजेक्ट**

द्वितीय वर्ष, तृतीय सेमेस्टर

कोर्स–1, SANS. 513- महाभाष्य एवं निबन्ध

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण के दार्शनिक स्वरूप से परिचित कराते हुए उनमें अपने शास्त्र से सम्बद्ध गम्भीर विषयों पर निबन्ध लिखने की प्रवृत्ति को विकसित करना।

पाठ्यग्रन्थ–महाभाष्य–प्रथमाह्निक

प्रथम इकाई–महाभाष्य, प्रथमाह्निक, प्रारम्भ से व्याकरणाध्ययन के प्रयोजन–पर्यन्त।

द्वितीय इकाई–प्रयोजन के बाद से लेकर 'आचारे नियमः' वार्तिक तक,

तृतीय इकाई–'प्रयोगे सर्वलोकस्य'–वार्तिक से अन्त तक

चतुर्थ इकाई–उपर्युक्त तीनों इकाईयों के पाठ्य से समीक्षात्मक प्रश्न

पञ्चम इकाई– निबन्ध

कोर्स–2, **SANS. 514- भाषा विज्ञान**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को भाषा की उत्पत्ति, वर्गीकरण तथा इसके घटक तत्वों का ज्ञान कराना।

प्रथम इकाई–भाषाशास्त्र–संघटनात्मक भाषाशास्त्र, भाषा की परिभाषा, भाषा, विभाषा, बोली आदि में अन्तर, भाषिक परिवर्तन, उसके कारण तथा दिशाएं।

द्वितीय इकाई–भाषाओं का वर्गीकरण–भारोपीय परिवार, सतम् एवं केन्तुम् वर्ग, इन्डो इरानियन परिवार

तृतीय इकाई–इन्डो आर्यन परिवार, भारतीय आर्यभाषाओं का विकास, ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ, समीकरण, विषमीकरण

चतुर्थइकाई– भाषा के घटक–स्वनिम (फोनिम), रूपिम (मारफीम), पदिम (टैक्सीम), अर्थिम (सेमेन्टिम) मानस्वर (कार्डियल बावेल), वाग्यन्त्र

पञ्चम इकाई–ध्वनिनियम–ग्रिम, वर्नर, ग्रासमान, अर्थपरिवर्तन की दिशाएं एवं कारण

निम्नलिखित वर्गों में से किसी एक वर्ग के तीनों कोर्स–

ऐच्छिक वर्ग–अ–वेद

कोर्स–3**, SANS 515 –यजुर्वेद**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को यजुर्वेद संहिता के विशिष्ट ज्ञान से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–शुक्लयजुर्वेद–माध्यन्दिन संहिता–प्रथम अध्याय, कण्डिका 1 से 10 तक

द्वितीय इकाई–शुक्लयजुर्वेद–माध्यन्दिन संहिता–प्रथम अध्याय, कण्डिका 11 से 20 तक

तृतीय इकाई––शुक्लयजुर्वेद–माध्यन्दिन संहिता–प्रथम अध्याय, कण्डिका 21 से अन्त तक

चतुर्थ इकाई– शुक्लयजुर्वेद–माध्यन्दिन संहिता, द्वितीय अध्याय, कण्डिका 01 से 17 तक

पञ्चम इकाई –शुक्यजुर्वेद–माध्यन्दिन संहिता, द्वितीय अध्याय, कण्डिका 18 से अन्त तक

कोर्स–3, SANS 516 **–मध्यसिद्धान्त कौमुदी एवं वाक्यपदीय**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया के माध्यम से रूपसिद्धि का ज्ञान एवं व्याकरण दर्शन से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–मध्यसिद्धान्तकौमुदी

प्रथम इकाई–सञ्ज्ञा से अच्सन्धिपर्यन्त,

द्वितीय इकाई– हल् सन्धि से विसर्ग सन्धि पर्यन्त

तृतीय इकाई–अजन्तप्रकरण (तीनों लिङ्ग)
चतुर्थ इकाई–वाक्य पदीय प्रारम्भ से 20 कारिका।
पञ्चम इकाई– वाक्य पदीय 21 से 50 कारिका।

कोर्स–3, SANS. 517 **न्यायदर्शन**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को न्याय दर्शन की परम्परा से परिचित कराना।
पाठ्यग्रन्थ–गौतम न्यायसूत्र–वात्स्यायनभाष्यसहित, प्रथम, अध्याय
प्रथम इकाई–प्रथमाह्निक सूत्र 1 से 11 तक
द्वितीय इकाई–प्रथमाह्निक, सूत्र 12 से 29 तक
तृतीय इकाई–प्रथमाह्निक सूत्र 30 से अन्त तक
चतुर्थ इकाई–द्वितीयाह्निक सूत्र 01 से 10 तक
पञ्चम इकाई–द्वितीयाह्निक सूत्र 11 से अन्त तक

कोर्स–3, SANS. 518–**काव्यशास्त्र**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को काव्यशास्त्र की उत्कृष्ट परम्परा से परिचित कराना।
पाठ्यग्रन्थ–ध्वन्यालोक (प्रथम एवं चतुर्थ उद्योत) एवं वक्रोत्तिजीवित (प्रथम उन्मेष)
प्रथम इकाई–ध्वन्यालोक प्रथम उद्योत 1 से 13 कारिका
द्वितीय इकाई–ध्वन्यालोक प्रथम उद्योत 13 से अन्त तक।
तृतीय इकाई–ध्वन्यालोक चतुर्थ उद्योत 01 से 10 कारिका तक।
चतुर्थ इकाई–वक्रोत्तिजीवित (काव्यप्रयोजन, काव्यलक्षण)
पञ्चम इकाई–वक्रोत्तिजीवित (वक्रोत्ति के प्रकार तक)

कोर्स–4, SANS. 519 A**, ऐतरेय ब्राह्मण एवं यज्ञ**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को **ऐतरेय** ब्राह्मण एवं यज्ञ से परिचित कराना।
प्रथम इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–1
द्वितीय इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–2
तृतीय इकाई–ऐतरेय ब्राह्मण–प्रथम पञ्चिका, अध्याय–3
चतुर्थ इकाई–वैदिक यज्ञ एवं उनके प्रमुख भेद,
पञ्चम इकाई–यज्ञीय पारिभाषिक शब्द एवं उपकरण

कोर्स–4, SANS. 520**- महाभाष्य**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–दर्शन की पृष्ठभूमि परिचित कराना।
पाठ्यग्रन्थ–महाभाष्य–द्वितीय आह्निक।
प्रथम इकाई–प्रारम्भ से अइउण् व्याख्यान तक ।
द्वितीय इकाई–ऋलृक् व्याख्यान से लेकर ऐऔच् तक ।
तृतीय इकाई–हयवरट् से लेकर वर्गार्थवत्ताधिकरणपर्यन्त।
चतुर्थ इकाई–प्रत्याहारेऽनुबन्धानाम्–तकं
पञ्चम इकाई–प्रत्याहारेऽनुबन्धानाम् से अन्त तक।

कोर्स–4, SANS. 521 **वैशेषिक दर्शन**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वैशेषिक दर्शन की परम्परा से परिचित कराना।
प्रथम इकाई–प्रशस्तपादभाष्य (पदार्थधर्मसंग्रह) द्रव्यनिरूपण
द्वितीय इकाई–प्रशस्तपादभाष्य (पदार्थसंग्रह) गुण–कर्मनिरूपण,

तृतीय इकाई– प्रशस्तपादभाष्य (पदार्थधर्मसंग्रह) सामान्य–विशेष–समवाय– निरूपण;
चतुर्थ इकाई–न्यायासिद्धान्तमुक्तावली, शब्दखण्ड, प्रारम्भ से पदनिरूपण पर्यन्त,
पञ्चम इकाई–न्यायासिद्धान्तमुक्तावली, शब्दखण्ड, पदनिरूपण के बाद से अन्त तक।

कोर्स–4, SANS. 522 –**गद्यकाव्य**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को गद्यकाव्य परम्परा से परिचित कराना।
प्रथम इकाई– कादम्बरी कथामुखम् (शूद्रकवर्णन)
द्वितीय इकाई–कादम्बरी कथामुखम् (विन्ध्याटवीवर्णन)
तृतीय इकाई–प्रभातवर्णन
चतुर्थ इकाई– विश्रुतचरितम् विन्ध्यपर्वतवर्णन प्रारम्भ से 10 गद्यांश तक
पञ्चम इकाई–11 से 20 गद्यांश तक (अहर्निश राजा के कर्तव्य वर्णन तक)

कोर्स–5, **SANS 523- शोधपरियोजना/रिसर्च प्रोजेक्ट**

द्वितीय वर्ष, चतुर्थ सेमेस्टर

कोर्स–1, SANS. 524 **व्याकरण एवं अनुवाद, (अनिवार्य कोर्स)**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण की प्रक्रिया (व्यावहारिक पक्ष) से परिचित कराते हुए व्यावहारिक संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कराना।
प्रथम इकाई–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) कर्ता एवं कर्म कारक,
द्वितीय इकाई–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) करण एवं सम्प्रदान कारक
तृतीय इकाई–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) अपादान कारक एवं षष्ठी विभक्ति,
चतुर्थ इकाई–सिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण) अधिकरण कारक
पञ्चम इकाई–हिन्दी अनुच्छेद का संस्कृत में अनुवाद

कोर्स–2, SANS. 525 **निरूक्त एवं वैदिक छंद**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को वेदाङ्गों में निरूक्त के महत्त्व तथा मूल वैदिक छन्दों से परिचित कराना।
प्रथम इकाई–निरुक्त प्रथम अध्याय, 1–2 पाद
द्वितीय इकाई–निरुक्त प्रथम अध्याय, 3–4 पाद
तृतीय इकाई–निरुक्त द्वितीय अध्याय का प्रथम पाद एवं सप्तम अध्याय का प्रथम पाद
चतुर्थ इकाई–निरूक्त सप्तम अध्याय 02 से 04 पाद।
पञ्चम इकाई–वैदिक मूल छन्दों–गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, जगती, बृहती और पंक्ति का सामान्य परिचय,

कोर्स–2, SANS. 526 –**परमलघुमंजूषा एवं वैयाकरणभूषणसार**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरणदर्शन की प्रौढ़ परम्परा से परिचित कराना।
प्रथम इकाई–परमलघुमञ्जूषा, प्रारम्भ से तादात्म्य निरूपण से पूर्व तक।
द्वितीय इकाई– परमलघुमञ्जूषा, तादात्म्यनिरूपण।
तृतीय इकाई–परमलघुमञ्जूषा, लक्षणानिरूपण ।
चतुर्थ इकाई–वैयाकरणभूषणसार लकारार्थ की प्रथम कारिका।
पञ्चम इकाई– वैयाकरणभूषणसार लकारार्थ की द्वितीय कारिका।

कोर्स–2, SANS 527, **योग एवं आगम**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को योग एवं आगम दर्शन से परिचित कराना।
पाठ्यग्रन्थ–पतञ्जलि–योगसूत्र–समाधि एवं साधन पाद (व्यासभाष्य), प्रत्याभिज्ञाहृदयम्
प्रथम इकाई–योगसूत्र–समाधिपाद–सूत्र 01 से 24 तक।
द्वितीय इकाई–योगसूत्र–समाधिपाद–सूत्र 25 से अन्त तक।
तृतीय इकाई–योगसूत्र– साधनपाद–सूत्र 01 से 15 तक
चतुर्थ इकाई– साधनपाद–सूत्र 16 से अन्त तक
पञ्चम इकाई–प्रत्याभिज्ञाहृदयम् (सम्पूर्ण सूत्र)

कोर्स–2, SANS. 528 **–काव्यप्रकाश**
कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को संस्कृत काव्यशास्त्रीय नियमों से परिचित कराना।
प्रथम इकाई–काव्यप्रकाश तृतीय उल्लास सम्पूर्ण
द्वितीय इकाई–काव्यप्रकाश चतुर्थ उल्लास सम्पूर्ण
तृतीय इकाई–काव्यप्रकाश पंचम उल्लास सम्पूर्ण
चतुर्थ इकाई– काव्यप्रकाश षष्ठ एवं सप्तम् उल्लास सम्पूर्ण
पञ्चम इकाई– काव्यप्रकाश अष्ठम् उल्लास सम्पूर्ण

कोर्स–3, SANS. 529 **अर्थसंग्रह एवं वृहद्देवता**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को यज्ञोपयोगी मीमांसा दर्शन एवं अनुक्रमणी साहित्य का ज्ञान कराना।

प्रथम इकाई– अर्थसंग्रह, प्रारम्भ से वेद लक्षण पर्यन्त

द्वितीय इकाई–विधि लक्षण से विनियोग विधि पर्यन्त

तृतीय इकाई– प्रयोगविधि से परिसंख्या विधि पर्यन्त

चतुर्थ इकाई– नामधेय लक्षण से अन्त तक।

पञ्चम इकाई–वृहद्देवता श्लोक संख्या 01 से 45 तक।

कोर्स–3, SANS 530 **–परिभाषेन्दु शेखर**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण की शास्त्रीय परिभाषाओं का ज्ञान प्राप्त कराते हुए लकारार्थ से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–परिभाषेन्दुशेखर, प्रथम तन्त्र, 1–2 परिभाषाएं

द्वितीय इकाई–परिभाषेन्दुशेखर, प्रथम तन्त्र, 3,4 परिभाषाएं

तृतीय इकाई– परिभाषेन्दुशेखर, प्रथम तन्त्र, 5,6 परिभाषाएं

चतुर्थ इकाई– परिभाषेन्दुशेखर, प्रथम तन्त्र, 7,8 परिभाषाएं

पञ्चम इकाई– परिभाषेन्दुशेखर, प्रथम तन्त्र, 9,10 परिभाषाएं

कोर्स–3, SANS 531– **चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शन**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शन की परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–नागार्जुन मूलमाध्यमिक कारिका, प्रकरण–प्रथम (प्रत्यय परीक्षा)

द्वितीय इकाई–नागार्जुन मूलमाध्यमिक कारिका, प्रकरण–24, (आर्यसत्य परीक्षा)

तृतीय इकाई– सर्वदर्शनसंग्रह (चार्वाक दर्शन)

चतुर्थ इकाई– सर्वदर्शनसंग्रह (बौद्ध दर्शन)

पञ्चम इकाई– सर्वदर्शनसंग्रह (जैन दर्शन)

कोर्स–3, SANS 532 **–दशरूपक**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को नाट्यशास्त्र की प्रौढ़ परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–दशरूपक प्रथम प्रकाश (अवस्थाएं, सन्ध्यादि)।

द्वितीय इकाई– दशरूपक द्वितीय प्रकाश (नायक एवं नायिका भेद)।

तृतीय इकाई– दशरूपक तृतीय प्रकाश (दशरूपक विवेचन)।

चतुर्थ इकाई– दशरूपक चतुर्थ प्रकाश (रस विमर्श 01 से 40 तक)।

पञ्चम इकाई– दशरूपक चतुर्थ प्रकाश (रस भेद 41 से अन्त तक)।

कोर्स–4, SANS. 533**–ऋक्प्रातिशाख्य एवं वैदिक स्वर**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को प्रातिशाख्य ग्रंथों एवं सिद्धान्त कौमुदी के स्वर वैदिक सूत्रों से परिचित कराना।

प्रथम इकाई–ऋक्प्रातिशाख्य–प्रथम पटल,

द्वितीय इकाई–ऋक्प्रातिशाख्य–द्वितीय पटल,

तृतीय इकाई–ऋक्प्रातिशाख्य–तृतीय पटल,

चतुर्थ इकाई–सिद्धान्तकौमुदी–स्वरवैदिक प्रकरण से निम्नलिखित 06 सूत्र–धातोः (6.1.162), अनुदात्ते च (6.1.190), लिति (6.1.193), कर्षात्वतो घञोऽन्त उदात्तः (6.1.159), समासस्य (6.1.223), बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् (6.2.1),

पञ्चम इकाई–सिद्धान्तकौमुदी–स्वरवैदिक प्रकरण से निम्नलिखित 05 सूत्र–दायाद्यं दायादे (6.2.5), तिङ्ङतिङः (8.1.28), नालुट् (8.1.29), गतिर्गतौ (8.1.70), तिङिचोदात्तवति (8.1.71)

कोर्स–4, SANS 534**–सिद्धान्तकौमुदी**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को व्याकरण–प्रक्रिया के माध्यम से रूप–सिद्धि का ज्ञान प्राप्त कराना, जिससे वे उन्हें वाक्यों में प्रयोग कर सकें।

प्रथम इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, अदादि से लकारार्थ प्रक्रिया तक

द्वितीय इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, कृत्यप्रक्रिया तक

तृतीय इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, केवल समास से समासान्त तक

चतुर्थ इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, तद्धित तक

पञ्चम इकाई–मध्यसिद्धान्तकौमुदी, साधारण प्रत्याय से त्वलार्थक तक।

कोर्स–4, SANS 535**– वेदान्त एवं मीमांसा**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को अद्वैत वेदान्त की शङ्कराचार्य की दृष्टि से परिचित कराना।

पाठ्यग्रन्थ–ब्रहम्सूत्र (चतुःसूत्री) शाङ्करभाष्य सहित

प्रथम इकाई–ब्रह्मसूत्र–अध्यासभाष्य

द्वितीय इकाई–ब्रह्मसूत्र–प्रथमसूत्र (शाङ्करभाष्य)

तृतीय इकाई–ब्रह्मसूत्र–द्वितीय तथा तृतीयसूत्र (शाङ्करभाष्य)

चतुर्थ इकाई– अर्थसंग्रह–विधि, मंत्र

पञ्चम इकाई–अर्थसंग्रह–नामधेय, निषेध एवं अर्थवाद

कोर्स–4, SANS. 536 **काव्य एवं नाटक**

कोर्स का उद्देश्यः–छात्रों को काव्य एवं नाट्य परम्परा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई– मेघदूत पूर्वमेघ 01 से 20 श्लोक तक।

द्वितीय इकाई– मेघदूत पूर्वमेघ 20 से अन्त तक,

तृतीय इकाई– मृच्छकटिक (प्रथम अंक अलंकार न्यास)

चतुर्थ इकाई– मृच्छकटिक द्वितीय अंक।

पञ्चम इकाई– मृच्छकटिक तृतीय अंक।

कोर्स–5, **SANS 537- शोधपरियोजना / रिसर्च प्रोजेक्ट**